International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 770-772

मुग़लकाल में शहरीकरण

परवीन जहाँ
जे.आर.एफ. शोध–छात्रा, मध्यकालीन एवं आधुनिक इतिहास विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

विद्वानों ने शहरीकरण का शहरों के भौतिक विकास और एक विशिष्ट जीवन शैली (शहरी) के रूप में अध्ययन किया है। पश्चिमी देशों में इस क्षेत्र में काफी काम किया गया है। परन्तु भारत में शहरी इतिहास का अध्ययन अभी विकास की अवस्था में है। शहर सभ्य जीवन के ''प्राचीनतम कलातथ्य'' हैं।[1] पिछली दो शताब्दियों के दौरान ''औद्योगिक क्रान्ति''[2] के कारण समाज और शहर की पहचान में परिवर्तन हुआ, क्योंकि शहरों में स्वयं परिवर्तन हुए। शहरी इतिहास आवश्यक रूप से शहरीकरण का अध्ययन है, अवधि विशेष में शहरी केन्द्र के विस्तार और उन कारणों का अध्ययन किया जाता है जिनसे उनका विकास और ह्रास होता है। इसमें शहरों द्वारा उत्पन्न पर्यावरण का उससे सम्बन्धित सामान्य आयामों के संदर्भ में अध्ययन किया जाता है, यह नौसर्गिक पर्यावरण, अर्थव्यवस्था, राजनीतिक तंत्र, सामाजिक ताने–बाने और शहरों में रहने वाले लोगों के सोच–विचार का आयाम है। इतिहास में 'शहर' के दो मुख्य लक्षण है – पहला, एक सीमित स्थान पर आबादी का उच्च घनत्व और दूसरा जनसंख्या का मुख्यतः गैर–कृषक खासकर गैर–खेतिहर स्वरुप।[3] शहरी जनसंख्या में वे लोग भी शामिल थे जो ग्रामीण माल का शहर के बाजारों में परिवहन करते थे। इस शोध–पत्र में हम भारत में इस विषय में अब तक किये गये शोधों के आधार पर तत्कालीन शहरी संरचना की जानकारी देगें।

गाँव के विपरीत शहरों की दो प्रमुख विशेषताओं पर अब आम सहमति है। प्रथम तो यह कि शहर एक घनी आबादी वाला ऐसा क्षेत्र था, जिसका विस्तार सीमित और निर्धारित था। दूसरा यह कि यहाँ की जनसंख्या प्रमुखतः गैर–कृषि आधारित थी। शहर की परिभाषा जनसंख्या और अधिकांश निवासियों के गैर–कृषि व्यवसाय के आधार पर देना सम्भव हो गया है। इस प्रकार शहरों में व्यक्ति स्थान अनुपात सीमित था और यहाँ के निवासी विविध प्रकार के व्यवसायों में कार्यरत थे। मानवीय इतिहास में शहरों के विकास को एक क्रान्ति के रूप में देखा गया है जिससे सभ्यता और इतिहास की शुरुआत हुई है।

मध्यकालीन भारत में शहरीकरण के विषय में विभिन्न व्याख्याएँ दी गयी है। इन व्याख्याओं में शहरीकरण के जिन कारणों की चर्चा की गयी है। वह प्रमुखतः चार प्रकार के शहरी केन्द्रों के विकास की ओर इंगित करते हैं :–

1. प्रशासनिक
2. धार्मिक
3. सैनिक/सामरिक महत्व के
4. बाजार (वाणिज्यिक)

मुग़लकालीन शहर स्वाभाविक रूप से प्रशासन के केन्द्रों के रूप में कार्य करते थे। मुग़लकाल के दिल्ली और लाहौर जैसे शहर इसी श्रेणी में आते थे। धार्मिक केन्द्र प्रमुखतः तीर्थ यात्रियों को आकृष्ट करते थे। सैनिक और सामरिक महत्व के शहरों का विकास प्रमुख रूप से छावनियों के रूप में हुआ। बाद में इन केन्द्रों में गैर–सैनिक जनसंख्या भी बस गयी। अटक और असीरगढ़ जैसे शहर इसी श्रेणी के थे। चौथी श्रेणी में ऐसे शहर आते हैं, जो वाणिज्यिक गतिविधियों के केन्द्र या उत्पादन के स्थल थे। अक्सर इस प्रकार के शहरों में दोनों गतिविधियाँ केन्द्रित होती थी। इस श्रेणी में मुग़ल साम्राज्य के पटना और अहमदाबाद जैसे शहर आते थे। इस अवधि के दौरान प्रौद्योगिकी में आवश्यक परिवर्तन और सुधार हुआ, जिसके परिणामस्वरुप उत्पादन में वृद्धि हुई।

यहाँ हमें दो बातों का ध्यान रखना जरुरी है पहला यह कि मुग़लकाल का एक औसत शहर सामाजिक व्यवहार और विशेषताओं में गाँव का एक विस्तृत रूप था। यह ग्राम शहर अविच्छन्नता मुग़लकालीन शहरीकरण की एक प्रमुख विशेषता थी। मुग़ल शहरी अर्थव्यवस्था की विविधता को देखते हुए इस काल के भारतीय शहर का कोई एक निश्चित स्वरुप स्थापित करना भ्रामक होगा। दूसरी विशेषता यह थी कि वाह्य रूप में समान (कार्यों की दृष्टि से) देखते हुए भी दो शहर वास्तव में काफी भिन्न होते थे। वास्तव में किसी शहरी केन्द्र का विकास इसकी ऐतिहासिक परिस्थितियों और भौगोलिक अवस्थिति पर निर्भर था। मुग़लकाल के दौरान हुए शहरीकरण के बारे में सामान्य कथन समकालिक स्रोतों में शहरों से सम्बन्धित शहरी केन्द्रों, शिल्प, वाणिज्य, बाह्य आकारों और जनसंख्या सम्बन्धी तत्वों के बारे में यदा–कदा दिए गए उल्लेखें पर आधारित है।[4]

मुग़लकालीन भारत में नगरीय जीवन की समृद्धि बढ़ी और नगरों की संख्या में भी वृद्धि हुई। मुग़ल शासक वर्ग पूर्णतः नगरोन्मुख था।[5] यद्यपि अर्थव्यवस्था का आधार अभी भी कृषि ही था। मगर सल्तनतकाल की तुलना में नगरीय जीवन अधिक समुन्नत रहा। इसके कई कारण थे। मुग़लकाल सत्ता के अधीन शान्ति और सुव्यवस्था, मुग़ल शासक वर्ग का नगरीय जीवन के प्रति अनुराग जिस कारण शिल्पकारों और दस्तकारों का वर्ग नगरों में निवास करने के लिए आकर्षित हुआ। मुग़लकाल के दौरान बहुत से सहवर्ती कारणों से शहरी विस्तार में तीव्रता आयी, ग्रामीण समुदायों का शहरी समुदायों में परिवर्तन हुआ, ''कारिया'' और ''कस्बा'' से शहर बने।[6] गाँवों और कस्बों से, जहाँ भूमि का महत्व अधिक था, शहर बने। वहाँ व्यापार की भूमिका सर्वोपरि थी। प्रशासनिक ढाँचों के कारण भी शहरीकरण में तीव्रता से वृद्धि हुई। कृषि के उन्नत तरीकों और कृषि–उत्पादन के बढ़ने से साम्राज्य की राजधानी, प्रान्तीय क्षेत्रीय राजधानियों और जिला मुख्यालयों (सरकार) का विकास हुआ। शेरशाह के आर्थिक सुधारों के फलस्वरुप उत्तर भारत में आर्थिक एकीकरण की प्रवृत्ति, सड़कों[7] और यातायात व्यवस्था की प्रगति और इसके फलस्वरुप व्यापार की उन्नति तथा यूरोपीय

व्यापारिक कम्पनियों का आगमन और तटवर्ती नगरों में बढ़ती हुई। व्यापारिक गतिविधियों ने मुग़ल साम्राज्य में नगरों की प्रगति में विशेष योगदान दिया।[8] शेरशाह ने दिल्ली में यमुना के किनारे एक नगर बसाया।[9] इन सबके अतिरिक्त पूर्वकालिक कारण जैसे सामरिक एवं प्रशासनिक आवश्यकतायें सूफी सन्तों की गतिविधियाँ आदि का भी योगदान इस प्रक्रिया में नितान्त बना रहा। यह स्मरणीय है कि नगरों का विकास चाहे जिस कारण से भी हुआ हो, उनकी समृद्धि और प्रभाव को बनाये रखने में सबसे महत्वपूर्ण तत्व उनका व्यापारिक एवं आर्थिक महत्व था। इसके अभाव में कोई भी नगर अपनी प्रधानता को बनाये रखने में सक्षम नहीं हो पाता था। अकबर की शाही राजधानी फतेहपुर सीकरी[10] का उदाहरण इस तथ्य की पुष्टि करता है।

अकबर के समय में मुग़ल–साम्राज्य में 120 नगरों और 3200 कस्बों का उल्लेख मिलता है।[11] बड़े नगर, कस्बों और मुहल्लों में विभाजित कर दिये जाते थे।[12] इनमें आबादी के दृष्टिकोण से आगरा और दिल्ली सबसे विशाल थे।[13] राल्फ फिंच नामक यूरोपीय यात्री के अनुसार आगरा और लाहौर, लन्दन और पेरिस से बड़े शहर थे।[14] अकबर के दरबार में आने वाले जेसुइट पादरी मोंसरेत ने लिखा है कि लाहौर यूरोप या एशिया के किसी भी नगर से पीछे नहीं था।[15] 17वीं सदी में आगरा फैलकर दो गुना हो गया।[16] बर्नियर जिसकी रचना 17वीं सदी के मध्य की है, कहता है कि दिल्ली पेरिस से कम नहीं था और आगरा दिल्ली से बड़ा था।[17] इस काल में पटना, राजमहल और ढाका बढ़कर बड़े–बड़े नगर बन गये। अहमदाबाद, लन्दन और उसके उपनगरों जितना बड़ा था तथा पटना की आबादी दो लाख थी[18] जो उन दिनों के हिसाब से एक बड़ी संख्या थी। ये नगर प्रशासन के केन्द्र नहीं थे, बल्कि व्यापार और विनिर्माण के केन्द्र के रूप में भी विकसित हुए। मैनरिक ने तत्कालीन पटना की आबादी 2 लाख के लगभग बतायी है। स्मरणीय है कि यह संख्या यूरोपीय नगरों की आबादी की तुलना में कई गुना अधिक थी। मुग़लकालीन नगरों में प्रशासनिक केन्द्र (शाही व प्रान्तीय राजधानियाँ) व्यापारिक केन्द्र (पत्तन एवं अन्तर्देशीय नगर) धार्मिक तथा शैक्षिक केन्द्र सभी शामिल थे। इनकी आबादी में विभिन्न सम्प्रदाय थे जिनमें भारतीय और विदेशी हिन्दू और मुसलमान आदि शामिल थे।

नगरीय आबादी के बीच स्पष्ट वर्गीकरण था। सर्वोपरि स्थिति शासक वर्ग की थी जिसमें सम्राट और उसका परिवार सामंत और बड़े अधिकारी शामिल थे। मध्यम वर्ग में निम्न स्तर के कर्मचारी, व्यापारी और कुछ अन्य व्यवसायी वर्ग थे, जबकि साधारण स्तर पर शिल्पकार, कारीगर और सेवक वर्ग के लोग थे। विभिन्न वर्गों की स्थिति में परिवर्तन की सम्भावना सदैव बनी रहती थी और ग्रामीण समुदाय की तुलना में नगरीय समाज में अधिक गतिशीलता थी।[19] इन्हें सामान्य तौर पर चार श्रेणियों में बाँटा जा सकता है :–

1. कुलीन एवं उनके सहयोगी, राज्य के अधिकारी तथा सैनिक
2. व्यापारिक और वाणिज्यिक कार्यों से सम्बन्धित वर्ग
3. धार्मिक प्रतिष्ठानों से सम्बन्धित वर्ग, संगीतकार, चित्रकार, कवि, लेखक, वैद्य, हकीम आदि।

मुग़लकाल के दौरान शहरीकरण की प्रक्रिया का महत्व सल्तनत काल के शहरीकरण से असाधारण रूप से भिन्न है। प्रमाणों से पता चलता है कि कुछ शहरी केन्द्र पुनः विकसित हुए, कुछ पुराने केन्द्रों (जैसे दिल्ली और लाहौर) का विस्तार हुआ और नये शहरी केन्द्र उभरे (इलाहाबाद, फतेहपुर सीकरी, गुजरात, लाहौर प्रान्त–अटक, बनारस और फरीदाबाद)।[20] यह सब अकबर और उसके उत्तराधिकारियों के काल में हुआ। यह प्रक्रिया 18वीं शताब्दी में भी जारी रही। मुग़लकाल के अधिकार क्षेत्र से बाहर भी विजयनगर, गोलकुण्डा, बीजापुर, कोचीन, कालीकट आदि पुराने शहर थे और मसुलीपट्टम जैसे नये शहर भी विकसित हुए,[21] जबकि छोटे शहर स्थानीय आवश्यकताओं और व्यापार की पूर्ति करते थे। बड़े शहरों का विश्वव्यापी महत्व हो गया। वहाँ से दक्षिण–पूर्वी एशिया, मध्य–पूर्वी एशिया और पश्चिमी यूरोप के साथ अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का नियंत्रण होता था।[22] इन शहरों के शिल्प उत्पादों, विकसित बाजारों, वहाँ उपलब्ध अनेक प्रकार की ऋण सुविधाओं, स्थल और जल मार्गों द्वारा उन्हें जोड़ने वाली विस्तृत संचार व्यवस्था तथा उनकी सम्पदा और समृद्धि ने विदेशी यात्रियों को काफी प्रभावित किया।[23]

मुग़लकालीन भारत में शहरों की संख्या, आकार और उनकी धन–सम्पदा में तेजी से वृद्धि हुई। उनमें से कुछ की आबादी यूरोप और इंग्लैण्ड के समकालीन शहरों से भी अधिक थी।[24] लेकिन उनकी वृद्धि से पारम्परिक गाँवों के जीवन का कोई अहित नहीं हुआ। कुछ शहर पुनर्जीवित हुए और कुछ नये शहर बने। कुछ शहर अफसरशाहों ने बनवाये और कुछ अभिजात वर्ग के लोगों ने। यह सब बादशाह की अनुमति लेकर किया गया। शहरीकरण के लिए बहुत से कारण उत्तरदायी थे – प्रशासनिक, सैनिक, भौगोलिक, आर्थिक और धार्मिक वाणिज्य से बल मिला। छोटे शहर स्थानीय जरुरतों और स्थानीय व्यापार की पूर्ति करते थे। बड़े शहरों में विविध प्रकार के निर्माण कार्य होते थे, बाजार थे तथा ऋण एवं संचार सुविधायें थी जिनका विश्व व्यापी महत्व था। ये शहर अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के केन्द्र थे।

शहरों में प्रशासन का प्रधान कोतवाल[25] होता था। वह उन सभी कार्यों को करता था जो आधुनिक समय में नगरपालिकायें और पुलिस अधिकारी मिलकर करते हैं।[26] उनका उत्तरदायित्व नगर में शान्ति और कानून बनाये रखना था। 'आईन–ए–अकबरी' में कोतवाल के कर्तव्यों का विशद रूप से उल्लेख मिलता है।[27] पत्तनों की देखरेख के लिए एक अलग अधिकारी की नियुक्ति की जाती थी जो 'मुतसद्दी' कहलाता था, उसे आर्थिक गतिविधियों की देखरेख करनी थी, जैसे व्यापारियों से चुंगी की वसूली, मुद्रालय की देखरेख।[28]

निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते है कि मुग़लकाल के दौरान भारत में शहरीकरण की दिशा में तीव्र गति से प्रगति हुई। इस शहरीकरण के कारण ही कई नवीन प्रसिद्ध नगरों की स्थापना हुई जो व्यापार एवं आर्थिक क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान के कारक बने। इन नगरों के विकास से शहरों की संख्या में वृद्धि, शिक्षा का प्रसार एवं भारत की धन सम्पदा में तीव्र गति से वृद्धि हुई।

सन्दर्भ

1. हरिश्चन्द्र वर्मा, मध्यकालीन भारत, भाग–2, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय प्रकाशन, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, द्वितीय संस्करण 2000, पृ0 473
2. हरिश्चन्द्र वर्मा, पूर्वोक्त, पृ0 473
3. हरिश्चन्द्र वर्मा, पूर्वोक्त, पृ0 473
4. हरिश्चन्द्र वर्मा, पूर्वोक्त, पृ0 475
5. हरिश्चन्द्र वर्मा, पूर्वोक्त, पृ0 476
6. हरिश्चन्द्र वर्मा, पूर्वोक्त, पृ0 476
7. सतीश चन्द्र, मध्यकालीन भारत, राजनीति, समाज और संस्कृति, हिन्दी अनुवादक नरेश 'नदीम', ओरियण्ट ब्लैकस्वॉन प्रकाशन, नई दिल्ली 110002, संस्करण 2009, पुनर्मुद्रण 2017, पृ0 217
8. इमत्याज अहमद, मध्यकालीन भारत एक सर्वेक्षण, नेशनल

पब्लिकेशन, पटना, प्रथम संस्करण 1989, पुनर्मुद्रण 2007, पृ0 284
9. सतीश चन्द्र, मध्यकालीन भारत, राजनीति, समाज और संस्कृति, पूर्वोक्त, पृ0 220
10. सतीश चन्द्र, पूर्वोक्त, पृ0 303 एवं इरफान हबीब अकबर एवं तत्कालीन भारत, अनुवादक नरेश 'नदीम', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 110002, दूसरा संस्करण 2016, पृ0 180–188
11. इमत्याज अहमद, पूर्वोक्त, पृ0 284 एवं सतीश चन्द्र, मध्यकालीन भारत, सल्तनत से मुग़लकाल तक (1526–1761) जवाहर प्रकाशन, नई दिल्ली–110016, षष्टम संस्करण 2016, पृ0 375
12. ए0एल0 श्रीवास्तव, अकबर महान भाग–2, अनुवादक डॉ0 भगवानदास गुप्त, शिवलाल अग्रवाल प्रकाशन, आगरा, प्रथम हिन्दी संस्करण 1972, पृ0 151
13. इमत्याज अहमद, पूर्वोक्त, पृ0 284
14. सतीश चन्द्र, मध्यकालीन भारत, राजनीति, समाज और संस्कृति, पूर्वोक्त, पृ0 303 एवं एस0के0 पाण्डे, मध्यकालीन भारत, प्रयाग एकेडमी प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 2010–11, पृ0 661
15. सतीश चन्द्र, मध्यकालीन भारत, राजनीति, समाज और संस्कृति, पूर्वोक्त, पृ0 303 एवं एस0के0 पाण्डे, पूर्वोक्त, पृ0 660
16. सतीश चन्द्र, मध्यकालीन भारत, सल्तनत से मुग़लकाल तक (1526–1761), पूर्वोक्त, पृ0 375
17. सतीश चन्द्र, मध्यकालीन भारत, राजनीति, समाज और संस्कृति, पूर्वोक्त, पृ0 303
18. सतीश चन्द्र, मध्यकालीन भारत, सल्तनत से मुग़लकाल तक (1526–1761), पूर्वोक्त, पृ0 375
19. इमत्याज अहमद, पूर्वोक्त, पृ0 284
20. हरिश्चन्द्र वर्मा, मध्यकालीन भारत, भाग–2, पूर्वोक्त, पृ0 475
21. हरिश्चन्द्र वर्मा, मध्यकालीन भारत, भाग–2, पूर्वोक्त, पृ0 475 एवं ए0आई0 चिचेरोव, मुग़लकालीन भारत की आर्थिक संरचना, अनुवादक मंगलनाथ सिंह, ग्रन्थ शिल्पी प्रकाशन, दिल्ली 110092, प्रथम हिन्दी संस्करण 2003, पुनर्मुद्रण 2013, पृ0 99
22. सतीश चन्द्र, मध्यकालीन भारत, राजनीति, समाज और संस्कृति, पूर्वोक्त, पृ0 304–305
23. सतीश चन्द्र, मध्यकालीन भारत, राजनीति, समाज और संस्कृति, पूर्वोक्त, पृ0 305
24. हरिश्चन्द्र वर्मा, मध्यकालीन भारत, भाग–2, पूर्वोक्त, पृ0 479
25. इमत्याज अहमद, पूर्वोक्त, पृ0 284 एवं ए0एल0 श्रीवास्तव अकबर महान भाग–2, पूर्वोक्त, पृ0 151
26. एल0पी0 शर्मा, मध्यकालीन भारत, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल प्रकाशन, आगरा, तेईसवाँ संशोधित संस्करण, 2007, पृ0 301
27. एस0के0 पाण्डे, पूर्वोक्त, पृ0 569–70
28. इमत्याज अहमद, पूर्वोक्त, पृ0 284